"और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन करेगा वह बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।"

समाज सुधार प्रकाशण श्रंखला 8

इस्लमा और सच्चाई

मौलाना अरशद मदनी

अध्यक्ष, जमीअत उलमा-ए-हिन्द

प्रकाशक

जमीअत उलमा-ए-हिन्द

1-बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-2

इस्लाम और सच्चाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया है:

﴿يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ﴾ (سورة التوبه: 119)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और (कर्म में) सच्चों के साथ रहो।"

इस आयत में आम लोगों को संयम अपनाने का निर्देश दिया गया है और ﴿كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ﴾ में इस ओर संकेत है कि संयम प्राप्त होने का तरीक़ा और माध्यम अच्छे और सच्चे लोगों की संगत और कर्म में उनके अनुकूल होना है, इस जगह पवित्र क़ुरआन ने विद्वानों और सदाचारियों के बजाय 'सादिक़ीन' का शब्द प्रयोग करके विद्वान, सदाचारी और श्रेष्ठ मनुष्य की पहचान भी बता दी है कि अच्छा और श्रेष्ठ केवल वही मनुष्य हो सकता है, बाहर और भीतर समान हो, नीयत और इरादे का भी सच्चा हो, कथनी और करनी में भी सच्चा हो, क्योंकि

सच्चाई ज़बान, हृदय और कर्म तीनों की सच्चाई पर बोला जाता है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

''और सच्चों के साथ रहो'' इससे यह भी मालूम होता है कि अगर तुम संयम को अपने जीवन में उतारना चाहते हो ताकि मृत्यु के समय तक तुम्हारा जीवन संयम के अनुकूल रहे तो सच्चों की संगत और दोस्ती को अपनाओ, क्योंकि दुनिया का प्रमाणित सिद्धांत यही है कि अच्छों का साथ मनुष्य को अच्छा और बुरे का साथ मनुष्य को बुरा बना देता है।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلاً سَدِيْداً﴾

(سورة الأحزاب:7)

''ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सत्य बात कहो।''

इस आयत में मूल आदेश सब मुसलमानों को यह दिया गया है कि संयम को अपनाओ, जिसकी वास्तविकता अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को पूर्ण रूप से मानना है, और उन सभी चीज़ों से बचना है जिनसे अल्लाह और उसके रसूल ने रोका है। ज़ाहिर है यह काम इन्सान के लिये आसान नहीं, इसलिये "اِتَّقُوا اللّٰه" के बाद एक विशेष कार्य का निर्देश है, अर्थात अपने कथन (ज़बान) का सुधार, यह भी अगरचे संयम का ही एक अंश है परन्तु ऐसा महत्वपूर्ण अंश है कि अगर इस पर नियंत्रण पा लिया जाए तो संयम के शेष अंश स्वयं प्राप्त होते चले जाऐंगे। (मआरिफ़ुल क़ुरआन, जिल्द 7, पृष्ठ 241)

﴿اِجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ﴾ (سورة الحج:3)

''झूठी बात से दूर रहो''

'कौले ज़ूर' से मुराद झूठ है। सत्य के विरुद्ध जो कुछ है

वह झूठ में दाख़िल है, चाहे वह मान्यता में हो या व्यवहार में या गवाही में झूठ बोलना हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सब से बड़े पापों में से एक बड़ा पाप गवाही में झूठ बोलना है और इसको आपने बार-बार दोहराया।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, जलद 6, पृष्ठ 662)

देखने में इसका कारण यह है कि आम तौर पर झूठी गवाही देकर मनुष्य किसी हक़दार को उसके अधिकार से वंचित कर देता है और किसी दूसरे को दिलवा देता है, फिर उसके परिणाम स्वरूप दुश्मनी, लड़ाई और झगड़े का ऐसा सिलसिला शुरू हो जाता है जो समाप्त होने का नाम नहीं लेता, ज़मीनें बिक जाती हैं, व्यापार नष्ट हो जाते हैं और कभी-कभी हत्या एवं हिंसा की नौबत भी आजाती है, जो दोनों पक्षों को और उनके परिवारों को बर्बाद कर डालती है। (अल्लाह तआला इससे बचाए)

﴿وَالصَّادِقِيْنَ وَالصَّادِقَاتِ﴾ (سورة الأحزاب:35)

''और सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें।''

बातों की सच्चाई अल्लाह को बहुत ही प्रिय है और यह आदत हर प्रकार से अच्छी है। सहाबा किराम रज़ि. में तो ऐसे महात्मा भी थे जिन्होंने इस्लाम से पहले भी कोई झूठ नहीं बोला था, सच्चाई ईमान की निशानी है और झूठ पाखण्ड की निशानी है। सच्चा मुक्ति पाता है और झूठा अपमानित होता है, सच्चाई अच्छे कार्यों का मार्गदर्शन करती है। मनुष्य सच बोलते-बोलते और सच्चाई का साथ देते-देते अल्लाह तआला के यहां बहुत सच्चा लिख लिया जाता है। (इब्ने कसीर, 22 सूरह अहज़ाब)

﴿وَلْيَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً﴾ (سورة النساء: 9)

'और सच्चाई की बात कहें''

'क़ौले सदीद' वह बात है जो सच्ची हो, झूठ का उसमें संदेह न हो, पुन्य हो जिसमें पाप का संदेह न हो, ठीक बात हो, 'हज़ल' अर्थात हंसी मज़ाक न हो, कोमल हो दुखदायी न हो।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, जिल्द 7, पृष्ठ 241)

इस्लाम और सच्चाई से संबंधित जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ निर्देश

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: عَلَيْكُمْ بِالصِّدْقِ فَإِنَّ الصِّدْقَ يَهْدِيْ إِلَى الْبِرِّ وَإِنَّ الْبِرَّ يَهْدِيْ إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا يَزَالُ الرَّجُلُ يَصْدُقُ وَيَتَحَرَّى الصِّدْقَ حَتّٰى يُكْتَبَ عِنْدَ اللّٰهِ صِدِّيْقاً.

(رواه الترمذي)

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अनहुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, तुम पर सच्चाई को अपनाना अनिवार्य है, क्योंकि सच बोलना नेकी के रास्ते पर डाल देता है और नेकी स्वर्ग तक पहुंचा देती है और मनुष्य जब सदैव सच ही बोलता है और सच्चाई ही को अपनाता रहता है तो अल्लाह तआला के यहां बहुत सच्चा लिख लिया जाता है।''

इस से मालूम हुआ कि सच्चाई ऐसा मूल गुण है, जिसको अपनाने से अन्य अच्छाईयों का रास्ता खुल जाता है और मनुष्य आसानी से स्वर्ग के रास्ते पर चल पड़ है।

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ بْنِ أَبِيْ قُرَادٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قال: مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُّحِبَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ أَوْ يُحِبُّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ فَلْيَصْدُقْ

حَدِيْثَهُ إِذَا حَدَّثَ، وَلْيُؤَدِّ أَمَانَتَهُ إِذَا أُؤْتُمِنَ، وَلْيُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهُ. (رواه البيهقي في شعب الإيمان)

''हज़रत अबदुर्रहमान इब्ने अबी क़ुराद रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, जिस व्यक्ति के लिये यह बात प्रसन्न करने वाली हो कि उसको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत हो, या यह कि अल्लाह और रसूल उससे मुहब्बत करें, तो उसे चाहिये कि जब वह बात करे तो सदैव सच बोले और जब उसको कोई धरोहर सपुर्द की जाये तो (कोई विश्वासघात किये बिन) उसको अदा करे, और अपने पड़ोसी के साथ अच्छा व्यवहार करे।''

عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ ؓ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ: أَضْمَنُوْا لِيْ سِتًّا مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَضْمَنْ لَكُمُ الْجَنَّةَ، اصْدُقُوْا إِذَا حَدَّثْتُمْ، وَأَوْفُوْا إِذَا وَعَدْتُمْ، وَأَدُّوْا إِذَا اؤْتُمِنْتُمْ، وَاحْفَظُوْا فُرُوْجَكُمْ، وَغُضُّوْا أَبْصَارَكُمْ، وَكُفُّوْا أَيْدِيَكُمْ. (رواه أحمد)

''हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तुम छः बातों की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लो तो मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग की ज़िम्मेदारी लेता हूं: (1) जब बात करो तो सदैव सच बोलो, (2) जब किसी से वादा करो तो उसको पूरा करो, (3) जब कोई धरोहर तुमको सपुर्द की जाए तो उसको ठीक-ठीक अदा करो, (4) दुष्कर्म से लिंग की सुरक्षा करो, (5) अपनी नज़रें नीची रखा करो (जिस पर नज़र डालना हराम है उस पर नज़र न डालो), और (6) (जिन अवसरों पर हाथ रोकने का आदेश दिया गया है वहां) हाथ रोको। (अत्याचार न करो)''

इस पवित्र हदीस में जितनी चीज़ों की शिक्षा अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दी है वह सब बुद्धिमानों एवं विद्वानों के नज़दीक उत्तम और अच्छी हैं, और हर सज्जन और बुद्धिमान व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म को मानता हो, ऐसी चीज़ों की अच्छाई को दिल से मानता है। इससे मालूम होता है कि इस्लाम धर्म अपने मानने वालों को अच्छी और पवित्र नैतिकता को अपनाने वाला ऐसा मनुष्य बनाना चाहता है जो अल्लाह के तमाम बंदों के साथ अच्छा व्यवहार करें, विशेष रूप से हमेशा सच बोलने पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़ा ज़ोर दिया है क्योंकि झूठ बोल कर मनुष्य सामने वाले को धोखा देता है जिसका अर्थ यह है कि इस्लाम झूठ से रोकता है तो वह यह कह रहा है कि किसी को धोखा न देना चाहिये, तेरे सामने मुस्लिम हो या ग़ैर-मुस्लिम, इसलिये कि धोखा देना हर धर्म में बहुत बुरा समझा जाता है।

﴿عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ ؓ قَالَ قَالَ: رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: التَّاجِرُ الصَّدُوْقُ الْأَمِيْنُ مَعَ النَّبِيِّيْنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ.

(رواه الترمذي)

''हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, सच्चा ईमानदार व्यापारी (क़यामत के दिन) पैग़म्बरों, सत्यवादियों और शहीदों के साथ होगा।''

इस्लाम केवल नमाज़, रोज़ा और हज ही का नाम नहीं है, बल्कि दूसरों के साथ सच्चाई और अच्छा व्यवहार करना भी इस्लाम की उत्तम शिक्षा में दाख़िल है

عَنْ أَبِي خَالِدٍ حَكِيْمِ بْنَ حِزَامٍ ؓ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ:
اَلْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَا بُوْرِكَ لَهُمَا فِي
بَيْعِهِمَا وَإِنْ كَتَمَا وَكَذَبَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا. (متفق عليه)

''हज़रत अबू ख़ालिद हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, ख़रीदने और बेचने वाले को अलग होने तक विकल्प है, अगर उन दोनों ने सच बोला और वस्तु संबंधित सत्य बता दिया तो उन दोनों के लिये ख़रीद-फ़रोख़्त में बरकत (गुप्त वृद्धि) अता की जाती है और अगर माल के दोष को छिपाया और झूठ बोला तो उन दोनों की ख़रीद-फ़रोख़्त से बरकत समाप्त कर दी जाती है''

इस हदीस में यह शिक्षा दी जा रही है कि व्यापारिक जीवन में अल्लाह की ओर से बरकत का प्राप्त होना व्यापार करने वालों की सच्चाई पर निर्भर है, अगर उन्होंने ख़ुदा की शिक्षा को छोड़कर केवल सांसारिक दौलत को जीवन का उद्देश्य बना लिया, झूठ बोला, वस्तु-दोष को छिपाया और धोखा दिया तो हो सकता है कि अस्थायी रूप से कुछ हराम माल मिल जाए, लेकिन भलाई, बरकत, शांति, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आख़िरत की सफलता का द्वार बंद हो जाएगा।

❑❑